IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बहुविषयक शिक्षा के सन्दर्भ में 64 कलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*पूजा शर्मा

**प्रो. अमिता पाण्डेय भारद्वाज

*शोधकर्त्री, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बी-4 कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र , नई दिल्ली – 110016।

**निदेशक एम.एम.टी.टी.सी. (यू.जी.सी.) एवं आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) बी-4 कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली – 110016 ।

सारांश

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में वर्णित '64 कलाएँ' न केवल हमारे ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक हैं बल्कि समकालीन कौशल-आधारित शिक्षा के लिए एक सुदृढ़ व्यावहारिक धरातल भी प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का केंद्रीय दृष्टिकोण अकादमिक संकीर्णता को तोड़कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास (Holistic Development) पर बल देना है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन महाकवि बाणभट्ट द्वारा प्रतिपादित 64 कलाओं का बहुविषयक (Multidisciplinary) दृष्टिकोण से एक संक्षिप्त एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसका उद्देश्य बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित 64 कलाओं का अध्ययन करना एवं उनका बहुविषयक शिक्षा के संदर्भ में बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित 64 कलाओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन करना है | इसमें कलाओं को केवल ऐतिहासिक दस्तावेज़ के रूप में न देखकर, उन्हें आधुनिक बहुआयामी पाठ्यक्रम (Curriculum) में एकीकृत करने की संभावनाओं को तलाशना है। इसमें गुणात्मक शोध उपागम (Qualitative Approach) के अंतर्गत 'संप्रत्यय विश्लेषण विधि' (Concept Analysis Method) का प्रयोग किया गया है बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित 64 कलाओं को उनकी प्रकृति के आधार पर आठ वर्गों में वर्गीकृत किया गया यथा कलात्मक कौशल (Artistic Skill), शारीरिक स्वच्छता एवं सौंदर्यीकरण का कौशल (Skill of Cleaning and Beautifying Body), साज-सज्जा का कौशल, (Skills of Decoration), पाक कौशल (Culinary Skills), खेल और मनोरंजन कौशल (Play and Entertainment Skills), बौद्धिक गतिविधियों हेतु कौशल (Skills for Intellectual Pursuits), अभियांत्रिक एवं तकनीकी कौशल (Engineering and technical Skills), विशिष्ट असामान्य कौशल (Special Uncommon Skills)| प्रत्येक वर्ग को बहुविषयक शिक्षा और नीति 2020 के तहत वर्ष 2023 के नए पाठ्यक्रम ढांचे में निधारित " विषय बकेट्स " के सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं को विश्लेषित किया गया है|

मुख्यशब्द: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 64 कलाओं का वर्गीकरण, बहुविषयक शिक्षा, संप्रत्यय विश्लेषण विधि, कौशल विकास।

भूमिका

प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था अपनी समग्रता और बहुविषयक दृष्टिकोण के कारण अद्वितीय रही है। उस समय शिक्षा केवल शास्त्रीय ज्ञान तक सीमित न होकर जीवनोपयोगी लौकिक कौशलों का भी सम्यक् समावेश करती थी। विद्या को "सा विद्या या विमुक्ते" अर्थात् मुक्ति प्रदायिनी के रूप में परिभाषित किया गया और इसी आधार पर शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का संपूर्ण परिमार्जन रहा। इस समग्र दृष्टिकोण के केन्द्र में 64 कलाएँ स्थित थीं| जिनमें ललित कलाओं गायन, वादन, नृत्य, चित्रकला के साथ-साथ पाकशास्त्र, वास्तु-निर्माण, चिकित्सा और वाणिज्य जैसे व्यावसायिक तथा जीवनोपयोगी कौशल भी सम्मिलित थे। इन कलाओं का वर्णन कामसूत्र, शुक्रनीति और महाकवि बाणभट्ट की कादंबरी जैसे ग्रंथों में मिलता है जो यह प्रमाणित करता है कि कला केवल मनोरंजन या अलंकरण का साधन न होकर जीवन-कौशल, सामाजिक व्यवहार और आध्यात्मिक साधना का आधार रही है। महाकवि बाणभट्ट की कादंबरी में नायक चंद्रापीड की शिक्षा-दीक्षा का जो विस्तृत विवरण मिलता है| वह इस बहुविषयक शिक्षा की जीवंत मिसाल है। वहाँ शिक्षा का स्वरूप ऐसा था जिसमें साहित्य, कला, विज्ञान और व्यावसायिक कौशल का संतुलित समावेश था। यह दृष्टिकोण आधुनिक युग की Multidisciplinary Education की संकल्पना को पूर्णतः चरितार्थ करता है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा जगत में एक युगांतरकारी परिवर्तन लेकर आई है। यह नीति ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों विज्ञान, कला, वाणिज्य और व्यावसायिक कौशल के बीच की कठोर सीमाओं को समाप्त करने की वकालत करती है। यह शिक्षा को लचीला, बहुविषयक और कौशल-आधारित बनाने पर बल देती है। इस नीति का मूल उद्देश्य केवल रोजगारपरक शिक्षा नहीं, अनुभवात्मक शिक्षण (Experiential Learning) और कौशल विकास के माध्यम से व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना है। इस परिप्रेक्ष्य में, कादंबरी में वर्णित 64 कलाओं का अध्ययनन केवल ऐतिहासिक जिज्ञासा का विषय नहीं है, यह आज की शिक्षा प्रणाली के लिए एक ठोस सैद्धांतिक और व्यावहारिक रोडमैप भी प्रदान करता है। यह अध्ययन स्थापित करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान और कौशल का अंतर्संबंध शिक्षा की मूल आत्मा रहा है और आधुनिक नीति 2020 उसी परंपरा का पुनरुत्थान है।

बहुविषयक शिक्षा (Multidisciplinary Education)

बहुविषयक शिक्षा का अर्थ एक ही विषय का अध्ययन अनेक विषयों की दृष्टि से करना है । इसे 'क्रॉस-डिसिप्लिनरी' भी कहा जाता है। यह एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ शिक्षार्थी को विज्ञान, कला, वाणिज्य, मानविकी और व्यावसायिक कौशल (Vocational Skills) के बीच की कठोर सीमाओं को तोड़कर सीखने की स्वतंत्रता होती है। इसका उद्देश्य केवल एक विषय का विशेषज्ञ बनाना नहीं, यह व्यक्ति के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करता है ताकि वह तार्किक, रचनात्मक और व्यावहारिक रूप से सुदृढ़ बन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी इस पर बल दिया है जिसका उद्देश्य विषयों के बीच की सीमाओं को पार करना है। बहुविषयक दृष्टिकोण पाठ्यक्रम के एकीकरण की एक पद्धति है जो विविध दृष्टिकोणों को उजागर करती है। शिक्षा में यह एक ऐसा मार्ग है जिसमें एक विषय का अनेक विषयों की दृष्टिकोण से शिक्षण होता है- उदाहरण के लिए **विज्ञान और कला का समन्वय**-मूर्तिकला या वास्तुकला (Architecture) के लिए केवल रचनात्मकता ही नहीं, ज्यामिति (Mathematics), धातु विज्ञान (Metallurgy) और भौतिकी (Physics) के ज्ञान की भी आवश्यकता होती है , **भाषा और संगीत का जुड़ाव**- काव्य रचना और नाट्य कला के लिए व्याकरण, मनोविज्ञान और ध्वनि-विज्ञान (Phonetics) का अंतर्संबंध अनिवार्य है, **व्यावहारिक कौशल**- कृषि, इत्र बनाना (Perfumier) और पाक कला (Cooking) को उच्च श्रेणी की विद्या माना जाता है जो आज के 'स्किल डेवलपमेंट' (Skill Development) कार्यक्रमों के समकक्ष हैं। शिक्षा प्रणाली जब ज्ञान को अलग-अलग खानों (Silos) में बांटकर देखती है तो वह छात्र का एकांगी विकास करती है। इसके विपरीत 64 कलाओं का मॉडल यह सिखाता है कि एक वैज्ञानिक को संगीतज्ञ और एक अर्थशास्त्री को साहित्यकार होने की पूर्ण स्वतंत्रता है |

माइकल जे. गेल्ब के अनुसार "आपके मस्तिष्क में सीखने की क्षमता लगभग असीमित है| जिससे प्रत्येक मानव संभावित रूप से प्रतिभाशाली हो सकता है।" अर्थात् बहुविषयक शिक्षा से छात्र नये विचारों की शक्ति को समझ सकते हैं। यह उन्हें व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करती है जिससे वे विषयों का चयन कर सकें और उनके संभावित लाभों का आकलन कर निर्णय ले सकें। इस प्रकार बहुविषयक दृष्टिकोण शिक्षा में व्यावहारिकता और लचीलापन लाता, साथ ही यह उच्च शिक्षा में युवाओं की मानसिकता को बदलने और भारतीय शिक्षा व्यवस्था की क्षमता का अनुभव कराने में भी सहायक होता है। महाविद्यालयों में बहुविषयक शिक्षा छात्रों को अपने प्रिय विषय चुनने का अधिकार देती है। वे जिस विषय को जानना चाहते हैं| उसे प्राप्त कर सकते हैं। ये विषय उन पर थोपे नहीं जाते। ऐसे विषय जो उनके ज्ञान में मूल्यवृद्धि कर सकते हैं| ये शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाते हैं।

बहुविषयक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

यह दूरदर्शी नीति 34 वर्ष पुरानी 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986' के स्थान पर लाई गई है, जिसका मुख्य उद्देश्य रटने पर आधारित (Rote Learning) पुरानी परीक्षा प्रणाली को समाप्त कर छात्रों में रचनात्मकता, तार्किकता, समस्या निवारण क्षमता (Problem Solving) और जीवन कौशलों का विकास करना है। इस नीति के अंतर्गत स्कूली शिक्षा के पारंपरिक 10+2 ढांचे को विस्थापित करके एक वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक रूप से सुदृढ़ 5+3+3+4 शैक्षणिक मॉडल को अपनाया गया है। यह नया ढांचा प्रारंभिक बाल्यावस्था की देखभाल और शिक्षा (ECCE) को औपचारिक स्कूली शिक्षा में शामिल करता है | जिससे 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों की सीखने की मजबूत नींव तैयार होती है। इसके अलावा, नीति का एक व्यापक राष्ट्रीय लक्ष्य वर्ष 2030 तक प्री-प्राइमरी से लेकर माध्यमिक स्तर तक देश के सभी बच्चों के लिए शत-प्रतिशत 'सकल नामांकन अनुपात' (Gross Enrolment Ratio) प्राप्त करना है ताकि कोई भी बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे। यह नीति मात्र शैक्षणिक अंकों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय छात्र के संज्ञानात्मक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और नैतिक पहलुओं के विकास पर समान रूप से बल देती है। इस नीति 2020 में बहु-विषयक शिक्षा (Multidisciplinary Education) को इसकी आत्मा और रीढ़ की हड्डी के रूप में रेखांकित किया गया है। इसका सबसे गहरा और मुख्य उद्देश्य ज्ञान के पारंपरिक क्षेत्रों जैसे विज्ञान, कला, वाणिज्य, मानविकी और व्यावसायिक कौशलों के बीच की उन कृत्रिम और कठोर सीमाओं को हमेशा के लिए तोड़ना है जिन्होंने छात्रों को अलग-अलग बंद खानों (Silos) में सीमित कर रखा था। वास्तविक जीवन की समस्याएं कभी भी केवल एक विषय के ज्ञान से हल नहीं की जा सकतीं| उनके लिए एक व्यापक और समन्वित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, एक सफल वास्तुकार (Architect) बनने के लिए न केवल ज्यामिति और गणित की समझ आवश्यक है बल्कि उसमें सौंदर्यशास्त्र, कला, मनोविज्ञान और पर्यावरण विज्ञान का बोध होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार, भाषा और संगीत सीखने वाले छात्र को भी ध्वनि-विज्ञान (Phonetics) और व्याकरण के तार्किक नियमों को समझने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। बहु-विषयक शिक्षा छात्रों को उनके दिमाग की असीमित क्षमताओं को पहचानने और एक समग्र वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित होने का अवसर प्रदान करती है।

इस नीति के निर्देशक सिद्धांतों में यह स्पष्ट रूप से अनिवार्य किया गया है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस बहु-विषयक दृष्टिकोण को व्यापक पैमाने पर लागू किया जाएगा। इसके तहत, वर्ष 2030 तक भारत के प्रत्येक जिले में या उसके बिल्कुल निकट कम से कम एक ऐसा विशाल और उच्च गुणवत्ता वाला बहु-विषयक उच्च शिक्षण संस्थान (HEI) स्थापित करने का संकल्प लिया गया है जहां सभी संकायों की पढ़ाई एक साथ हो सके। इसके अलावा, देश में आईआईटी (IITs) और आईआईएम (IIMs) की तर्ज पर 'Multidisciplinary Education and Research Universities' (MERUs) की स्थापना की जाएगी जो वैश्विक मानकों के स्तर पर अनुसंधान और कला-विज्ञान के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। स्नातक (Undergraduate) स्तर पर छात्रों को एक अत्यंत लचीला 'मल्टीपल एंट्री और एग्जिट' (Multiple Entry and Exit) सिस्टम दिया जा रहा है। इस व्यवस्था के तहत यदि कोई छात्र किन्हीं व्यक्तिगत या वित्तीय कारणों से अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ता है तो उसकी पढ़ाई बेकार नहीं जाएगी| उसे एक वर्ष पूरा करने पर सर्टिफिकेट, दो वर्ष पर डिप्लोमा, तीन वर्ष पर बैचलर डिग्री और चार वर्ष का शोध-आधारित पाठ्यक्रम पूरा करने पर 'बैचलर विद रिसर्च' की डिग्री दी जाएगी। छात्रों के इन शैक्षणिक अंकों को सुरक्षित रखने के लिए एक 'Academic Bank of Credits' (ABC) की व्यवस्था की गई है| जिससे वे देश के किसी भी संस्थान में अपनी पढ़ाई वहीं से दोबारा शुरू कर सकें जहां उन्होंने छोड़ी थी। इस दस्तावेज़ में प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की '64 कलाओं' के पुनरुद्धार को समकालीन शिक्षा के लिए "सोने पर सुहागा" माना गया है क्योंकि यह आधुनिक तकनीकी ज्ञान को एक गहरा नैतिक और व्यावहारिक आधार प्रदान करता है।

विषय वर्गों (Subject Classes) के संदर्भ में गहरे नीतिगत बदलावों के तहत अब स्कूलों और विश्वविद्यालयों में कला (Arts), विज्ञान (Sciences) और वाणिज्य (Commerce) जैसे सख्त और रूढ़िवादी स्ट्रीम सिस्टम को पूरी तरह खत्म कर दिया गया है। इसके स्थान पर एक मुख्य विषय (Major) और एक वैकल्पिक विषय (Minor) चुनने की अद्भुत स्वतंत्रता दी गई है। अब कोई भी छात्र यदि भौतिक विज्ञान (Physics) पढ़ रहा है, तो वह बिना किसी संकोच या बाधा के अपनी रुचि के अनुसार संगीत (Music), अर्थशास्त्र (Economics) या फैशन डिजाइनिंग को अपने दूसरे विषय के रूप में चुन सकता है। महाविद्यालयों में छात्रों को अपनी पसंद के अनुसार पाठ्यक्रम का चयन करने की यह स्वायत्तता इसलिए दी गई है ताकि शिक्षा उन पर एक बोझ या थोपा हुआ विषय न लगे बल्कि वे सीखने की प्रक्रिया का खुलकर आनंद ले सकें। इसके साथ ही, सैद्धांतिक ज्ञान की कमियों को दूर करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) को मुख्य पाठ्यक्रम में एकीकृत किया गया है। इसके तहत कृषि, बागवानी, इत्र बनाने की कला, भोजन कला (Cooking), हस्तशिल्प और कोडिंग जैसे व्यावहारिक विषयों को कौशल विकास (Skill Development) कार्यक्रमों से जोड़ा गया है

और स्थानीय कारीगरों व उद्योगों के साथ प्रत्यक्ष 'इंटर्नशिप' को अनिवार्य बनाया गया है। इसका दूरगामी परिणाम यह होगा कि जब छात्र अपनी औपचारिक शिक्षा पूरी करके बाहर निकलेंगे, तो वे केवल डिग्रीधारी नहीं होंगे बल्कि समाज और उद्योग की वास्तविक ज़रूरतों के अनुसार पूरी तरह से आत्मनिर्भर और रोजगार-योग्य (Employable) कुशल पेशेवर होंगे।

कलाओं की सम्प्रत्यात्मक अवधारणा

भारतीय सन्दर्भ में कलाओं का विशेष महत्त्व है| कला शब्द भारतीय संस्कृति, दर्शन और सौन्दर्यशास्त्र का अभिन्न अंग है। कला का उद्भव मानव सभ्यता के उद्भव से माना जाता है कहा जाता है की मानव सभ्यता के उद्भव के समय मनुष्य अपने भावनाओं, विचारों और अनुभवों को जिन विभिन्न माध्यमों से अभिव्यक्त करता था उन सभी माध्यमों को 'कला' कहा गया है। कला शब्द संस्कृत की कल् धातु से कच् 'तथा टाप् (कल्+ कच्+ टाप्) प्रत्यय लगाने से बनता है। संस्कृत कोश में यह शब्द विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त हुआ है- गिनना, क्रम से रखना या सुंदर ढंग से प्रस्तुत करना, शोभा अथवा अलङ्करण आदि है यदि हम इतिहास तथा संस्कृति के सन्दर्भ में कला का तात्पर्य ले तो सौन्दर्य लिया जा सकता है| कला के विषय में पारिभाषिक शब्दावली में कहा जा सकता है कि "अपने मनोगत भावों को सौदर्य के साथ दृश्य रूप में व्यक्त करना ही कला है। कला मनुष्य की सौंदर्य भावना को मूर्त रूप प्रदान करती है"| प्राचीन भारत में कला को साहित्य और संगीत के समकक्ष मानते हुए मनुष्य के लिए उसे आवश्यक बताया गया है|- **साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः । तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥** अर्थात् जिस व्यक्ति के जीवन में साहित्य, संगीत और कला का अभाव होता है, उसकी तुलना पशु से की जाती है। ऐसा जीवन भले ही मवेशियों की तरह घास चरकर न बिताया जाए फिर भी पशुवत अस्तित्व से अधिक कुछ नहीं है। कलाएँ आत्मा को परिष्कृत करती हैं, मानवीय चेतना को ऊँचा उठाती हैं और मनुष्य को साधारण पशुओं से अलग करती हैं। इन उच्चतर गतिविधियों के बिना, अस्तित्व निम्न और अर्थहीन बना रहता है। यह श्लोक मानव जीवन में सांस्कृतिक और बौद्धिक गतिविधियों के महत्व पर जोर देता है और उन्हें मानवीय गरिमा और पूर्णता के लिए आवश्यक बताता है। प्राचीनों ग्रंथो के अनुसार कला वह है जो भोग में विश्रान्त न होती हो-**विश्रान्तिर्यस्याः सम्भोगे सा कला न कला मता। लीयते परमानन्दे ययात्मा सा परा कला।।** अर्थात जिसका उदेश्य भोग या मनोरंजन हैं वह कला नहीं है वरन् जो परमानंद में लीन कर दे वही सच्ची कला हैं | भारतीय परंपरा में कला का उद्देश्य केवल भोग या मनोरंजन नहीं माना गया है| वह साधन है जो मनुष्य को परमानंद में लीन कर दे। भारतीय संदर्भ में "कला वह मानवीय क्रिया है जिसमें भाव, कल्पना और कौशल के रूप, ध्वनि, शब्द या गति के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है।" आधुनिक परिप्रेक्ष्य में कला को रचनात्मक, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक कौशल का स्रोत माना जाता है। इसका मूल उद्देश्य मानव का समग्र विकास है। वर्तमान समय में कला मानव और मशीन के बीच संवाद का माध्यम भी बन रही है जैसे डिजिटल आर्ट, एआई-जनित संगीत और वर्चुअल थिएटर। इसी नीति 2020 ने कला और समग्र शिक्षा को कौशल के रूप में शामिल किया है ताकि विद्यार्थी का बहुआयामी विकास हो सकें। भारतीय साहित्य ग्रंथों में कलाओं की संख्या भिन्न-भिन्न रूप से प्राप्त होती है। रामायण और महाभारत में कलाओं का वर्णन अलग-अलग रूपों में मिलता है। यद्यपि कलाएँ अनन्त हैं और इन्हें गिना नहीं जा सकता तथापि उपयोगिता की दृष्टि से कुछ ग्रंथों में इनकी संख्या 64 और 86 बताई गई है। वात्स्यायन के *कामसूत्र*, क्षेमेन्द्र के *कलाविलास* और *शुक्रनीति* में 64 कलाओं का वर्णन है, जबकि बौद्ध ग्रंथ *ललितविस्तर* में 86 कलाओं का उल्लेख मिलता है। भरतमुनि के *नाट्यशास्त्र* में नाट्यकला को सर्वकला का संग्रह कहा गया है। बाणभट्ट ने अपनी रचनाओं में वात्स्यायन द्वारा वर्णित 64 कलाओं का उल्लेख करते हुए इन्हें उत्तम शिक्षा और समग्र व्यक्तित्व निर्माण का आधार माना है। उन्होंने कलाओं का दायरा चित्रकला या गायन तक सीमित नहीं रखा वे विज्ञान, गणित, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, व्यावसायिक कौशल और संवाद जैसी जीवनोपयोगी तकनीकों को इसमें सम्मिलित किया। इन 64 कलाओं को और अधिक अर्थपूर्ण बनाने के लिए इनकी प्रकृति के अनुसार आठ वर्गो में वर्गीकृत किया जा सकता है |

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य है- बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित 64 कलाओं का अध्ययन करना एवं बहुविषयक शिक्षा के संदर्भ में बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित 64 कलाओं का विश्लेष्णात्मक अध्ययन करना|

शोध विधि

अनुसंधान कार्यों में प्रयुक्त की जा रही उपागम के आधार पर अध्ययन को दो भागों में विभक्त किया जाता है मात्रात्मक और गुणात्मक शोध उपागम | गुणात्मक शोध उपागम के अंतर्गत विभिन्न विधियाँ आती है जिसमें से एक विधि संप्रत्यय विश्लेषण विधि)Concept Analysis Method) है| इस अध्ययन में संप्रत्यय विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया है | संप्रत्यय विश्लेषण विधि से तात्पर्य उस विधि से जिसमें लिखित व मौखिक संप्रेषण से प्राप्त आधार सामग्री का विश्लेषण करके सूचनाओं एवं तथ्यों की विवेचना की जाती है |

प्रदत्त स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्रोत और द्वितीय स्रोतों की सहायता से अध्ययन किया गया जो निम्नलिखित है- **प्राथमिक स्रोत**- शर्मा , शेषराज रेग्मी कादम्बरी और **द्वितीय स्रोत** - त्रिपाठी, बाबूराम, कादंबरी कथामुखम एवं मिश्र,जगदीशचन्द्र , शुक्रनीति , भाग – 1 एवं 2 |

शोध परिणाम

बहुविषयक शिक्षा के सन्दर्भ में बाणभट्ट द्वारा उल्लिखित 64 कलाओं को उनकी प्रकृति के अनुसार आठ वर्गों में वर्गीकृत करके विश्लेषित किया गया है ये आठ वर्ग है यथा कलात्मक कौशल (Artistic Skill), शारीरिक स्वच्छता एवं सौंदर्यीकरण का कौशल (Skill of Cleaning and Beautifying Body), साज-सज्जा का कौशल, (Skills of Decoration), पाक कौशल (Culinary Skills), खेल और मनोरंजन कौशल (Play and Entertainment Skills), बौद्धिक गतिविधियों हेतु कौशल (Skills for Intellectual Pursuits), अभियांत्रिक एवं तकनीकी कौशल (Engineering and technical Skills), विशिष्ट असामान्य कौशल (Special Uncommon Skills)| प्रत्येक वर्ग को बहुविषयक शिक्षा और नीति 2020 के तहत वर्ष 2023 के नए पाठ्यक्रम ढांचे में निधारित " विषय बकेट्स " के सन्दर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं को विश्लेषित किया गया है –

प्रथम वर्ग - कलात्मक कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण - इस वर्ग में आठ कलाएं है यथा गीत, वाद्य, नृत्य, चित्र, वाजीकरण, सूत्रक्रीड़ा, वीणा-डमरू वादन और नाटक-दर्शन कलाएं सम्मिलित हैं| इन सभी कलाओं की प्रकृति कलात्मक है इसलिए इन्हें कलात्मक कौशल के अंतर्गत रखा गया है| कलात्मक कौशल से अभिप्राय उन सृजनात्मक और अभिव्यक्तिकारी क्षमताओं से है जो व्यक्ति के सौंदर्यबोध, भावनात्मक संवेदनशीलता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को विकसित करती हैं बहुविषयक शिक्षा के संदर्भ में ये कलाएं अनुभवात्मक कौशल सीखने को प्रोत्साहित करती हैं और इससे छात्रों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, आत्मविश्वास और सामाजिक-भावनात्मक क्षमता बढ़ती हैं ये सभी विधाएँ मनुष्य की भावनाओं को व्यक्त करने में मदद करती है | National Curriculum Framework for School Education 2023 (NCFSE - 2023) में विद्यालय स्तर पर ये कलाएँ *कला शिक्षा (Art Education)* के अंतर्गत आने वाले विषयों दृश्य कला (चित्रकला, शिल्पकला, डिजिटल आर्ट) और प्रदर्शन कला (संगीत, नृत्य, नाटक/थिएटर, मूवमेंट आर्ट्स) शामिल हैं। इन कलाओं के माध्यम से छात्रों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, आत्मविश्वास और सामाजिक-भावनात्मक क्षमता का विकास होता है। साथ ही, बहुविषयक शिक्षा के ढाँचे में ये कलाएँ अनुभवात्मक कौशल सीखने को प्रोत्साहित करती हैं और अन्य विषयों जैसे विज्ञान, गणित, भाषाक्रीडा और सामाजिक विज्ञान से भी जुड़कर *शिक्षा* को सशक्त बनाती हैं। **उच्च शिक्षा में** ये कलाएँ *फाइन आर्ट्स, परफॉर्मिंग आर्ट्स, म्यूज़िकोलॉजी, थिएटर स्टडीज़, डांस स्टडीज़, मीडिया और डिज़ाइन स्टडीज़* जैसे अनुशासनों से जुड़ती हैं। यहाँ इनका अध्ययन केवल कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, ये शोध, आलोचना, तकनीकी प्रयोग और करियर अवसरों से भी जुड़ता है यथा गीत और वाद्य संगीत उच्च शिक्षा में म्यूज़िकोलॉजी और साउंड डिज़ाइन से जुड़ते हैं, नृत्य डांस स्टडीज़ और परफॉर्मिंग आर्ट्स का हिस्सा बनता है, चित्रकला फाइन आर्ट्स और डिज़ाइन में आती है, सूत्रक्रीड़ा और नाटक दर्शन थिएटर स्टडीज़ और लोककला इसी प्रकार ये सभी कलाएं सभी विषयों के अध्ययन अध्यापन में सहायक है |

द्वितीय वर्ग - शारीरिक स्वच्छता एवं सौंदर्यीकरण के आधार पर कलाओं का विशलेषण- इस वर्ग में नौ कलाएं है यथा तिलक, दन्तवसन, दाँत, कपडे व देह में रंग करना, चित्रयोग, जूडा बनाना, प्रसाधन, कर्णपत्रभंग, गहने पहनाना (भूषणधारण), हाथ की सफाई (हस्तलाघव) और वस्त्रों को इस तरह पहनाने की कला कि लम्बा व्यक्ति छोटा और मोटा व्यक्ति दुबला मोटा लगे कलाएं सम्मिलित हैं| ये कलाएं व्यक्तिगत स्वच्छता, सौंदर्यशास्त्र और आत्म-प्रस्तुति से सम्बन्धि हैं शारीरिक स्वच्छता एवं सौंदर्यीकरण कौशल से अभिप्राय उन व्यक्तिगत स्वच्छता, देखभाल और सौंदर्य संबंधी अभ्यासों से है जो शारीरिक स्वास्थ्य और समाज को आनंदित करने का माध्यम है | ये कलाएँ भावनात्मक अभिव्यक्ति, सांस्कृतिक संप्रेषण और सामुदायिक सहभागिता को प्रोत्साहित करती हैं| आत्म-विश्वास और सामाजिक प्रस्तुति को बेहतर बनाते हैं| बहुविषयक शिक्षा में ये कलाएं जीवन-कौशल, स्वास्थ्य शिक्षा और आत्म-देखभाल की आदतें सिखाकर विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक विकास को सुदृढ़ करता है इसलिए इन कलाओं को शारीरिक स्वच्छता और सौंदर्यीकरण से समबन्धित वर्ग मे रखा गया हैं। NCF 2023 और के 'सब्जेक्ट बकेट' अनुसार कलाओं का वर्गीकरण इस वर्ग में उल्लेखित तिलक लगाना, दंतवसन (दांतों की सफाई), दांत, कपड़े व देह में रंग करना, चित्रयोग, जूड़ा बनाना, प्रसाधन (मेकअप/सजना), गहने पहनाना और वस्त्र पहनने की कलाएँ शामिल हैं। NCF 2023 के अनुसार, इन कलाओं का सीधा संबंध व्यक्तिगत स्वच्छता, आत्म-प्रस्तुति और शारीरिक स्वास्थ्य से है इसलिए इन्हें 'Physical Education and Well-being' (शारीरिक शिक्षा और कल्याण) के अंतर्गत रखा जाएगा। साथ ही, प्रसाधन, आभूषण धारण और वस्त्र विन्यास जैसी रचनात्मक कलाओं को 'Art Education' (Visual Arts / Visual Crafts) विषय क्षेत्र में भी शामिल किया जा सकता है

तृतीय वर्ग - साज सज्जा कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण- इस वर्ग में छह कलाएं यथा चावल या फूलों से रंगोली बनाना, फूलों की सेज बिछाना, मणिभूमिकाकर्म, सेज सजाना, तरह तरह की मालाएँ गूँथना, पुष्पस्तबक बनाना कलाएं सम्मिलित है | ये कलाएं वातावरण और वस्तुओं के सौंदर्यीकरण से जुड़ी हैं| साज सज्जा कौशल से तात्पर्य किसी वस्तु, स्थान या व्यक्ति को सौंदर्यपूर्ण, आकर्षक और व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता | बहुविषयक शिक्षा के अनुसार इन कलाओं को इंटीरियर डिजाइन, इवेंट डेकोरेशन, फ्लोरिस्ट्री और फूड-स्टाइलिंग से जोड़कर मिडल व सेकेंडरी दोनों चरणों में व्यावहारिक उद्यमिता के अवसर प्रदान किए जा सकते हैं। NCF 2023 के अनुसार इन सभी साज-सज्जा की विधाओं को 'Art Education' (Visual Arts and Local Crafts) के मुख्य 'सब्जेक्ट बकेट' में वर्गीकृत किया जा सकता है क्योंकि ये सौंदर्यबोध, आकार, रंग और रचनात्मकता का विकास करती हैं। इसके अतिरिक्त, इन्हें 'व्यावहारिक उद्यमिता' (Practical Entrepreneurship) और 'Vocational Education' (व्यावसायिक शिक्षा) की 'सब्जेक्ट बकेट' के अंतर्गत भी एक मुख्य विकल्प के रूप में स्थान दिया जा सकता है ।

चतुर्थ वर्ग - पाक कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण - इस वर्ग में तीन कलाएं है यथा साग सब्जी , लप्सी व खाद्य बनाना (खाद्य-तैयारी), पना व अन्य पेय बनाना (Skill in preparing drinks and wines) , उबटन, मालिश ओर केश मलने की कुशल कलाएं सम्मिलित है| ये पोषण, स्वास्थ्य और आतिथ्य से सम्बन्धित जीवनोपयोगी कलाएँ हैं| पाक कौशल से अभिप्राय उन व्यावहारिक और सैद्धान्तिक क्षमताओं से हैं जिनमें भोजन की तैयारी, पोषण-ज्ञान, खाद्य-सुरक्षा और रसोई-प्रबंधन शामिल होते हैं| समग्र शिक्षा में पाक कौशल अनुभवात्मक और कौशल-आधारित शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी ज्ञान, स्वास्थ्य-साक्षरता और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करते हैं ये सभी बहुविषयक शिक्षा के ही अंग है | NCF 2023 के अनुसार इस वर्ग की भोजन की तैयारी, पोषण, खाद्य-सुरक्षा, और रसोई-प्रबंधन जैसी कलाएं पूरी तरह से 'होटल और आतिथ्य' (Hospitality & Tourism) तथा 'स्वास्थ्य और कल्याण' (Health & Wellness) जैसे व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education') से मेल खाती हैं। वहीं दूसरी ओर, शरीर पर उबटन लगाना, तेल से मालिश करना और बालों की देखभाल जैसी शारीरिक सेवा-सुश्रूषा से जुड़ी कलाएं मुख्य रूप से शारीरिक शिक्षा और कल्याण (Physical Education and Well-being) सब्जेक्ट बकेट का हिस्सा बनती हैं, जो स्वास्थ्य साक्षरता, व्यक्तिगत स्वच्छता और शारीरिक देखभाल को बढ़ावा देती हैं।

पंचम वर्ग - खेल और मनोरंजन कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण- इस वर्ग में आठ कलाएं यथा जलवाद्य, उदकघात, जादू (इंद्रजाल), पहेली बूझना, अन्त्याक्षरी, जुआ, पाँसे का खेल, बच्चों के खिलौने बनना कलाएं सम्मिलित है ये कलाएं मनोरंजनात्मक और खेल-कौशल से सम्बन्धित हैं | बहुविषयक शिक्षा के अंतर्गत ये सभी कलाएं शारीरिक, मानसिक और सामाजिक क्षमताओं का विकास करती है जो खेलकूद, शारीरिक प्रशिक्षण, मनोरंजक गतिविधियाँ और खेल-प्रबंधन से जुड़ी होती है | ये मानसिक चपलता और सामाजिक आनंद बढ़ाने के साधन हैं। ये कलाएं मानसिक सजगता और सामाजिक आनंद को बढ़ाती हैं। NCF 2023 के अनुसार इस वर्ग की अधिकांश कलाएं

शारीरिक और खेल से जुड़ी हुई है इसलिए ये सभी कलाएं सब्जेक्ट बकेट के शारीरिक शिक्षा और कल्याण के अंतर्गत आएंगी। इसके अतिरिक्त, खिलौने बनाने जैसी रचनात्मक कलाएं 'Art Education' (कला शिक्षा) सब्जेक्ट बकेट का हिस्सा बनेंगी।

षष्ठ वर्ग - बौद्धिक गतिविधियों हेतु कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण-इस वर्ग में दस कलाएं यथा क्लिष्ट पुस्तक का पाठ, पुस्तकवाचन, काव्यसमस्या-पूर्ति, कूटभाषा का बोध, देशज भाषाओं का ज्ञान, छंद में लुप्त अक्षरों की पूर्ति, समस्यापूर्ति , अभिधानकोश, छंदों का ज्ञान और अलंकारशास्त्र कलाएं सम्मिलित है| ये सभी कलाएं बौद्धिक कलाएं हैं जो बौद्धिक गतिविधियों के कौशल वर्ग के अंतर्गत आती है| ये कलाएँ व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और साहित्यिक अभिव्यक्ति को निखारती हैं । पाठ के अनुसार षष्ठ वर्ग में बौद्धिक और ज्ञान संबंधी कुल 10 कलाएं आती हैं। इनमें पुस्तकवाचन (किताबें पढ़ना), काव्यसमस्या-पूर्ति, कूटभाषा का बोध, देश-भाषाओं का ज्ञान, छंद का ज्ञान, अक्षरों की पूर्ति (अक्षरमुष्टिका), समयमातृकोश, अभिधानकोश (शब्दकोश ज्ञान), छंदों का ज्ञान और अलंकारशास्त्र शामिल हैं। यह वर्ग पूरी तरह से दिमागी विकास, भाषा की पकड़ और तार्किक क्षमताओं से संबंधित है। NCF 2023 के अनुसार इस वर्ग की सभी कलाएं भाषा शिक्षा (Language Education) और सामाजिक विज्ञान शिक्षा (Social Science Education) सब्जेक्ट बकेट के अंतर्गत समाहित की जा सकती है ।

सप्तम वर्ग -अभियांत्रिक एवं तकनीकी कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण - इस वर्ग में चौदह कलाएं यथा इत्र, फुलेल बनाना, सिलाई बुनाई, चटाई व बाँस का सामान बनाना, धातु के पात्र आदि की घिसाई, बढ़ई का काम, वास्तुविद्या, चाँदी की परख, धातुविज्ञान, रत्नपरीक्षा, वृक्षायुर्वेद, निमित्त का ज्ञान, स्वचालित मशीनें बनाना, सामरिकशास्त्र और व्यायामकला)है| ये कलाएं तकनीकी व शिल्प कौशल सम्बंधित हैं| बहुविषयक शिक्षाके अंतर्गत ये कलाएं अभियांत्रिक और तकनीकी कौशल वे व्यावहारिक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं का विकास करती हैं जिनमें समस्या-समाधान, डिज़ाइन और सिस्टम-सोच, प्रोग्रामिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, मेकॅनिकल फेब्रिकेशन, रोबोटिक्स, डेटा-विश्लेषण, नेटवर्किंग और मेंटेनेंस शामिल होती हैं| ये जीवन को सुविधायुक्त और उन्नत बनाने के लिए आवश्यक है | NCF 2023 के दिशानिर्देशों के अनुसार इस वर्ग की कलाएं अभियांत्रिकी एवं तकनीकी कौशल' के अंतर्गत आने वाली कलाएं मुख्य रूप से स्कूली शिक्षा के व्यावसायिक शिक्षा, कला शिक्षा, और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषयों के अंतर्गत आएंगी। इस वर्ग में शामिल कौशल जैसे कि सिलाई-बुनाई, चटाई व बांस का सामान बनाना, और बड़ई का काम (कारपेंट्री) व्यावहारिक व्यावसायिक कौशल का हिस्सा हैं। वहीं दूसरी ओर, चांदी की परख, धातुविज्ञान (Metallurgy), वास्तुकला (Architecture), स्वचालित मशीनें बनाना (Automation), इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल फैब्रिकेशन, कोडिंग/प्रोग्रामिंग और रोबोटिक्स जैसी उच्च-तकनीकी विधाएं आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित और कंप्यूटर विज्ञान (Computer Science) के पाठ्यक्रम में समाहित की जा सकती है ।

अष्टम वर्ग - विशिष्ट असामान्य कौशल के आधार पर कलाओं का विशलेषण - इस वर्ग में छह कलाएं यथा मेडे , मुर्गे तीतर की लड़ाई कराना, तोता और मैना से बोल बुलवाना, सांकेतिक अक्षर पहचानना, एक बार सुन कर किसी बात को वैसा का वैसा दोहरा देने की कला, बहुरूपिये की कला और शिष्टाचार कलाएं सम्मिलित है| बहुविषयक शिक्षा के सन्दर्भ में ये कलाएं अनूठे, क्षेत्रीय या उभरते हुए कौशलों का विकास करती हैं जो सामान्य शैक्षिक श्रेणियों से अलग होते हैं और जिनकी मांग सीमित परन्तु उच्च मूल्यवाली होती है| NCF 2023 के अनुसार, इस वर्ग की कलाएं कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और कल्याण, व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत आती हैं | ये कलाएं संज्ञानात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और सांस्कृतिक विकास में भी अपना योगदान देती हैं। इस वर्ग में शामिल पशु-पक्षी संवाद, सांकेतिक भाषा (Sign Language/Secret Coding), और बहुरूपिया जैसी प्रदर्शन कलाएँ (Performing Arts) छात्रों में अमूर्त सोच, संचार कौशल, और सामुदायिक सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ाव को बढ़ावा देती हैं। व्यावहारिक होने के कारण माध्यमिक स्तर पर इन्हें स्कूल-प्रमाणित स्थानीय आकलनों के माध्यम से जांचा जाता है जो रटने के बजाय व्यावहारिक ज्ञान और अनुभवात्मक अधिगम (Experiential Learning) पर बल देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि कलाएं केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक धरोहर नहीं, ये भविष्य की शिक्षा का एक व्यावहारिक रोडमैप है। 64 कलाएं वे विभिन्न कौशल हैं जो व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, रचनात्मक और मानसिक संतुलन के रूप में समृद्ध करने वाली बहुआयामी कौशल हैं। इनका उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में मिलता है| प्राचीन भारत में व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास के लिए ये 64 कलाएं आवश्यक मानी जाती थीं। इनका मुख्य उद्देश्य सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करना है। इन कलाओं के माध्यम से छात्र आत्मनिर्भर, रचनात्मक और बुद्धिमान बनता है। ये कलाएं व्यक्तिगत आत्म-प्रस्तुति, जीवनोपयोगी रोजगार क्षमता और सामुदायिक जीवन की गुणवत्ता आदि को बढ़ाने में आहम भूमिका अदा करते हैं। ये कलाएं बहुविषयक शिक्षा के विकास में प्रबल आधार प्रदान करती है| यह प्रमाणित करता है कि प्राचीन भारतीय कलाओं का यह बहुविषयक ढांचा (Multidisciplinary Framework) आधुनिक युग में 'ज्ञान को अलग-अलग खानों में बांटने की प्रवृत्ति' (Compartmentalization of Knowledge) को समाप्त करने, नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप एक रचनात्मक, कौशल-युक्त और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण में अत्यंत प्रासंगिक एवं दिशा-निर्देशक प्रदान कर सकता है। अत: विद्यालय और उच्च शिक्षा के विविध विषयों के पाठ्यक्रमों में 64 कलाओं का उनकी प्रकृति एवं आवश्यकता विश्लेषण अनुसार यथा स्थान प्रदान किया जा सकता है जो छात्रों को सम्पूर्ण और सफल बनाने में सहायक होंगे और साथ ही अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ने का अवसर प्रदान करेगे |

सन्दर्भ

- कुमार, आर. (2019), सांस्कृतिक धरोहर और व्यक्तित्व विकास में उसका योगदान. भारतीय अध्ययन पत्रिका।
- मिश्र, जगदीशचन्द्र(2019), शुक्रनीति, भाग -1 एवं 2 चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी|
- शर्मा, रमेश(2018) भारतीय शिक्षा और संस्कृति. दिल्ली विश्वविद्यालय।
- शर्मा , शेषराज रेग्मी ,(2014), कादम्बरी ,चौखाम्बा सुरभारती प्रकाशन , वाराणसी |
- शर्मा पूजा, भारद्वाज अमिता पाण्डेय(2026) समग्र शिक्षा के सन्दर्भ में 64 कलाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन, शोध पत्र, विधिना, ISSN:3049-3986,pp64-71|
- CHAUHAN MEENAKSHI, (2023) MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL APPROACHES-NEP2020, Chapter ID: NSP/ICAAR-2023/A-14, P-ISBN: 978-93-88996-58-7 / E-ISBN: 978-93-88996-57-0.
- Ganguly, A. B. (1962), Sixty four arts in ancient India, The English Book Store. https://archive.org/details/dli.ministry.27091
- Guruvāsarah.(2026, May 28), सुभाषितसङ्ग्रह, https://sa.wikiquote.org/wiki.
- Ministry of Education, Government of India, (2020), National Education Policy 2020, Government of India, https://www.ncert.nic.in/pdf/nep/NEP_2020.pdf.
- Narayan, J. (2025, July 25), भारतीय ज्ञान परम्परा और चतुःषष्टि कला [Indian knowledge tradition and the sixty-four arts] Social Research Foundation. https://socialresearchfoundation.com/new/publish-journal.php?editID=11537.
- Kumar Naresh, (2023), International Council for Education Research and Training,Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal, @2023 Vol. 02, Issue 01, 44-53, ISSN: 2959-1376, https://doi.org/10.5281/zenodo.7752390.
- Sanskṛtam, (2026.05.17), सा विद्या या विमुक्तये, श्रीविष्णुपुराणे प्रथमस्कन्धे एकोनविंशोऽध्याय, Samskrtam. https://samskrtam.wordpress.com/.
- UNESCO. (2026, June 1). Social development, UNESCO. https://www.unesco.org/en/query-list/s/social-development.
- Wikipedia (Hindi) (2026.06.02), https://hi.wikipedia.org/wiki.